

---

# Yamunashtakam 2

यमुनाष्टकम् २

## Document Information

---

Text title : yamunaashhTakam 2

File name : yamunaa82.itx

Category : aShTaka, devii, nadI, devI, shankarAchArya

Location : doc\_devii

Author : Shankaracharya

Transliterated by : Sridhar Seshagiri seshagir at engineering.sdsu.edu

Proofread by : Sridhar Seshagiri seshagir at engineering.sdsu.edu

Latest update : August 23, 2000

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

February 2, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

## Yamunashtakam 2

### यमुनाष्टकम् २



॥ श्रीः ॥

कृपापारावारं तपनतनयां तापशमनीं  
मुरारिप्रेयस्यां भवभयदवां भक्तिवरदाम् ।  
वियज्ज्वालोलोन्मुक्तां श्रियमपि सुभासेः परिदिनं  
सदा धीरो नूनं भजति यमुनां नित्यकृलदाम् ॥ १ ॥

मधुवनयारिणि भास्करवाह्निनि जाल्विसङ्गिनि सिन्धुसुते  
मधुरिपुभूषणि माधवतोषिणि गोकुलभीतिविनाशकृते ।  
जगदधमोयिनि मानसदायिनि केशवकेलिनिदानगते  
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ॥ २ ॥

अयि मधुरे मधुमोदविलासिनि शैलविदारिणि वेगपरे  
परिजनपालिनि दृष्टनिषूदिनि वाञ्छितकामविलासधरे ।  
व्रजपुरवासिजनार्जितपातकहारिणि विश्वजनोद्भरिडे  
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ॥ ३ ॥

अतिविपद्भुघिमग्रजनं भवतापशताकुलमानसकं  
गतिमतिहीनमशेषभयाकुलमागतपादसरोजयुगम् ।  
ऋणभयभीतिमनिष्कृतिपातककोटिशतायुतपुञ्जतरं  
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ॥ ४ ॥

नवजलदधुतिकोटिलसत्तनुडेमभयाभररञ्जितडे  
तडिदवडेलिपदाञ्चलयञ्चलशोभितपीतसुयेलधरे ।  
मणिमयभूषणचित्रपटासनरञ्जितगञ्जितभानुकरे  
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ॥ ५ ॥

शुभपुलिने मधुमत्तयदूदूभवरासमलोत्सवकेलिभरे  
उच्यकुलायलराजितमौक्तिकहारमयाभररोदसिके ।

नवमणिङ्कोटिकभास्करकञ्चुकिशोभिततारकछारयुते  
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ॥ ६ ॥

करिवरमौज्जिकनासिकभूषणवातयमद्भुतयञ्चलके  
मुषकमलामलसौरभयञ्चलमत्तमधुप्रतलोचनिके ।  
मणिगणकुण्डललोपरिस्फुरदाकुलगण्डयुगामलके  
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ॥ ७ ॥

कलरवनूपुरडेभयाथितपादसरोरुडसारुणिके  
धिमिधिमिधिमिधिमितालविनोदितमानसमञ्जुलपादगते ।  
तव पदपङ्कजमाश्रितमानवचित्तसदाभिलतापडरे  
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ॥ ८ ॥

भवोत्तापाम्बोधौ निपतितजनो दुर्गतियुतो  
यदि स्तौति प्रातः प्रतिदिनमन्याश्रयतया ।  
ड्याङ्गैः कामं करकुसुमपुञ्जै रविसुतां  
सदा भोक्ता भोगान्मरणसमये याति हरिताम् ॥ ९ ॥

एति श्रीमत्परमहंसपरिप्राजकाचार्यस्य  
श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य  
श्रीमच्छंकरभगवतः कृतौ  
यमुनाष्टकं सम्पूर्णात् ॥

Encoded by Sridhar Seshagiri

---

—  
Yamunashtakam 2

pdf was typeset on February 2, 2024

—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

